गन्ने की खेती से सम्बन्धित सस्य–क्रियाओं का माहवार कैलेण्डर

(बसन्तकालीन, उत्तर भारत)

जनवरी

1. पेड़ी व शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की फसल की कटाई करें।
2. कटे हुए खेत में ढूंठों की छटाई व खेत की सिंचाई करें।
3. पेड़ी में खाद व उर्वरक डालें।
4. जनवरी के अन्तिम सप्ताह तक खेत में अन्य खड़ी फसलों जैसे आलू, सरसों आदि की कटाई करके गन्ने की बुवाई हेतु खेत खाली कर दें।
5. यदि फरवरी में गन्ना बोना है तो खेत में पलेवा करें।
6. बुवाई हेतु खाद, बीज आदि निवेशों की उपलब्धता सुनिश्चित करें।

फरवरी

1. मध्यम देर से पकने वाली प्रजातियों की गन्ने की फसल की कटाई करें।
2. पेड़ी की शुरूआत करें।
3. गन्ना लगाने के लिए खेत की तैयारी करें।
4. बसन्तकालीन गन्ना बुवाई करें।
5. जिन खेतों में गन्ना बुवाई करना है यदि खाली नहीं है तो अन्य फसलों की कटाई करके खेत खाली कर लें।
6. खाली हुए खेतों का पलेवा करके गन्ना बुवाई हेतु तैयारी करें।
7. जनवरी में शुरू की गई पेड़ी में फरवरी के अन्तिम सप्ताह में सिंचाई करें।

मार्च

1. गन्ना बुवाई हेतु खेत की तैयारी करे।
2. यदि नमी कम हो तो खेत का पलेवा करे तथा जुताई करें।
3. गन्ने की बुवाई करें।
4. यदि गन्ना खेत में खड़ा है तो कटाई करें।
5. पेड़ी की शुरूआत करें।
6. पेड़ी वाले खेत की जुताई या गुड़ाई व सिंचाई करके नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की सारी मात्रा लाइनों के किनारे–किनारे डालकर मिट्टी में मिला दें।
7. फरवरी में बोये गये गन्ने का यदि जमाव हो गया हो तो मार्च के अन्तिम सप्ताह में सिंचाई करें।
8. गन्ने की बुवाई शीघ्र समाप्त कर लें।
9. गेहूँ वाले खेतो में यदि गन्ना बोना हो तो उसकी कटाई करके खेत खाली कर लें।

अप्रैल

1. फरवरी में बोये गये गन्ने की सिंचाई करके ओट आने पर गुड़ाई करे व कुल नत्रजन की चौथाई मात्रा का प्रयोग (खड़ी फसल में) करें।
2. गेहूँ की फसल कटने के बाद खाली हुए खेतों का पलेवा करके यथा शीघ्र तैयार करके बुवाई कर दें।
3. बुवाई के बाद यदि खेत में नमी कम हो गई हो तो बुवाई से 10–15 दिन के बाद एक सिंचाई करके अन्धी गुड़ाई करें।
4. मार्च में बोए गन्ने में पहली सिंचाई करें तथा नत्रजन की एक चौथाई मात्रा डालें।
5. मार्च में शुरू की गई पेड़ी में दूसरी सिंचाई व गुड़ाई करें तत्पश्चात् 100 किग्रा0 यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से डालें।
6. खर पतवारों के नियंत्रण के लिए निराई–गुड़ाई करें।

मई

1. फरवरी में शुरू की पेड़ी की तीसरी सिंचाई मई के प्रथम सप्ताह में कर दें ।
2. बावक फसल की भी सिंचाई करें।
3. शरद कालीन गन्ने की फसल में पहली बार हल्की मिट्टी चढ़ायें।
4. प्रथम सप्ताह में चोटी बेधक के अण्डे जो निचली पत्तियों के पृष्ठ पर होते है, एकत्रित करके जला दें।
5. खरपतवारों के नियंत्रण के लिए गुड़ाई करें अथवा 2,4 –की 1000 ग्राम/ है0 मात्रा 600 लीटर पानी में घामल बनाकर छिड़काव करें।

जून

1. गन्ने में मिट्टी चढ़ाये।
2. गन्ने की अन्तिम गुड़ाई के बाद सिंचाई करें।
3. जून के तीसरे सप्ताह में यूरिया शेष एक चौथाई मात्रा का प्रयोग करे ।
4. फसल को चोटी बेधक कीट से बचाने के लिए फ्यूराडान (3 जी0) 33 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की लाइनों के किनारे–किनारे पौधों के पास डालें।

जुलाई

1. फसल को चोटी बेधक कीड़े से बचाने हेतु ट्राइकोग्रामा जैपोनिकम के 50,000 प्रौढ़ प्रति हैक्टेयर की दर से 10 दिन के अन्तराल पर जुलाई से अक्टूबर तक खेत में छोड़े।
2. तना बेधक की रोकथाम के लिए ट्राइकोग्रामा किलोनिस के 50,000 (पचास हजार) पौढ़ प्रति हे0 की दर से 10 दिन के अन्तर पर जुलाई से अक्टूबर तक खेत में छोड़े।
3. माह के अन्त में आखिरी बार मिट्टी चढ़ाकर नालियों को जल निकास के उपयुक्त बनायें।

अगस्त

1. गन्ने की सूखी पत्तियों को निकाल दें।
2. बीमारी युक्त थानों को निकालकर जला दें या मिट्टी के नीचे दबा दें।
3. प्रत्येक थान के गन्नों को आपस में बॉध दें।

सितम्बर

1 आमने–सामने की पंक्तियों के गन्ना थानों की आपस में कैचीनुमा बंधाई करें।
2 गन्ने की निचली सूखी पत्तियों को निकाल दें।
3 बीमारी युक्त थानों को निकालकर जला दे या मिट्टी में दबा दें।

अक्टूबर

1 शरद कालीन बुवाई हेतु खेत की तैयारी करे।
2 अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह तक बुवाई अवश्य कर लें।
3 आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, बीज के लिए उगाई गयी फसल में सिंचाई आवश्यक है।

नवम्बर

1 पेड़ी गन्ने एवं उच्च शर्करा युक्त शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की कटाई करें।
2 भूमि की सतह से ऊपर के ढूँठों एवं पार्श्व जड़ों की कटाई करके पेड़ी की शुरूआत करें।
3 शरदकालीन गन्ने की बुवाई अतिशीघ्र पूरी कर लें।
4 शरदकालीन अन्तः फसलों जैसे आलू, सरसों, तोरिया, मसूर, चना आदि की गन्ने की पंक्तियों के बीच संस्तुति के अनुसार बुवाई करें।

दिसम्बर

1 पेड़ी एवं शरदकालीन गन्ने की कटाई करें।
2 अक्टूबर में बोए गए गन्ने में सिंचाई करें।
3 अन्तः फसल को पाले से बचाने हेतु अन्तिम सप्ताह में हल्की सिंचाई करें।